भारत के आर्थिक विकास में वाणिज्य शिक्षा की उत्प्रेरक भूमिका का अध्ययन।

डॉ. साक्षी शर्मा, स्वतंत्र शोधार्थी (वाणिज्य)

ss4500527@gmail.com

शोध – सारांश

आज 21 वीं सदी का भारत औद्योगिकरण व तकनीकी के पथ पर निरंतर अग्रसर हो रहा है। परिणामरूवरूप देश आत्मनिर्भरता की ओर गतिमान है। जिसमें मुख्य रूप से विनिर्माण क्षेत्र अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। देश की कुल आय का एक बड़ा हिस्सा आय कर (21%) व निगमित कर (18%) से ही प्राप्त होता है। जो स्पष्ट करता है कि औद्योगिक संस्थान देश के आर्थिक विकास में विशेष योगदान देते है। औद्योगिकरण की सफलता हेतु वाणिज्य शिक्षा का होना अनिवार्य है। अतः नई शिक्षा नीति – 2020 में भी परंपरागत शिक्षण प्रणाली व पाठ्यक्रम के स्थान पर व्यवहारिक शिक्षा व आधुनिक पाठ्यक्रमों पर जोर दिया जा रहा है। इस शोध पत्र का उद्देश वाणिज्य शिक्षा के उत्प्रेरकों का अध्ययन करना है, जो मुख्य रूप से देश के आर्थिक विकास को प्रभावित करते है। वाणिज्य शिक्षा मुख्यतः व्यापार, व्यवसाय व वित्त पर आधारित होती है। जो विशेषतः लेखांकन, अर्थशास्त्र, विपणन व प्रबंधन आदि क्षेत्रों को सम्मिलित करती है। अतः बढ़ती हुई प्रतियोगिता का सामना करने एवं विकसित अर्थव्यवस्था हेतु वाणिज्य शिक्षा अति – आवश्यक है। वाणिज्य शिक्षा केवल एक पाठ्यक्रम या शिक्षण प्रणाली तक ही सीमित नहीं है। बल्कि यह आत्मनिर्भर भारत का एक साकार स्वरूप है।

मुख्य शब्द – आर्थिक विकास, वाणिज्य शिक्षा, औद्योगिकरण

I. प्रस्तावना

वाणिज्य शिक्षा औद्योगिक जगत की सफलता का मूलमंत्र है। यह सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों ही ज्ञान का समावेश करती है। देश में वर्ष 2021 – 22 तक GER (Gross Enrollment Ratio) 28.4% रहा। जो दर्शाता है कि साक्षारता के स्तर में निरंतर वृद्धि हो रही है। आंकड़ों के अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों में 13.8% वृद्धि दर्ज की गई है। जिसमें वर्ष 2024 – 25 में वाणिज्य विषयों में नामांकन कुल विद्यार्थियों का 18 – 20% है। सीबीएसई की सांख्यिकी रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात तथा विशेषतः शहरी क्षेत्रों में वाणिज्य संकाय का चुनाव करने वालों की संख्या अधिक है। स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों में जागरूकता व वैश्विक बाजार का ज्ञान होने के कारण वाणिज्य शिक्षा के प्रति अधिक रूझान देखने को मिल रहा है। देश में स्नातक स्तर पर वाणिज्य (बी.कॉम) में सबसे अधिक ~ 14% – 18% नामांकन दर्ज किया गया है। तथा वर्ष 2024 – 25 में डिजिटल मार्केटिंग के पाठ्यक्रम में 25 – 30% एवं डेटा एनालिटिक्स में 20 – 25% वृद्धि हुई है। अतः ये आंकड़ें दर्शाते है कि वाणिज्य शिक्षा के प्रति शिक्षार्थियों का रूझान निरंतर बढ रहा है। इसका मुख्य कारण तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था, नवीन तकनीकी, ए.आई. व वैश्विक मांग है। यह शोध पत्र उन कारकों का अध्ययन प्रस्तुत करता है जो वाणिज्य शिक्षा के अभिन्न अंग है। साथ ही यह भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु वाणिज्य शिक्षा के प्रत्येक आयामों का व्यवस्थित अध्ययन करता है। वाणिज्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रशासन आवश्यकतानुसार शिक्षा पद्धति में सुधार कर रही है। नई शिक्षा नीति 2020 एवं केन्द्रिय बजट 2025–26 सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तनों को शामिल करते है। अतः स्पष्ट है कि वाणिज्य शिक्षा व देश की अर्थव्यवस्था एक – दूसरे की पूरक है। वाणिज्य शिक्षा एक ऐसे शिक्षित, कुशल व योग्य व्यक्ति का निर्माण करती है जो भविष्य में देश की अर्थव्यवस्था के क्रियांवयंन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, एवं वैश्विक स्तर पर देश का नेतृत्व करते है।

II. शोध – समीक्षा

Dr. Nasir Ahmed (2025). 'The Role of Commerce Education in Shaping Business Leaders for 2047'. वाणिज्य शिक्षा के द्वारा ही शैक्षणिक संस्थाओं एवं औद्योगिक के मध्य स्थित अंतराल को दूर किया जा सकता है। यह नेतृत्व कौशल, डिजिटल कुशलता तथा समस्या समाधान कौशल प्रदान करती है। वाणिज्य शिक्षा के माध्यम से ही औद्योगिक संस्थायें अप्रत्याशित लाभ अर्जित कर सकती है। परिणामस्वरूप आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

B. D., Vishwanath & S.M., Prabhakar (2025). A Study on Challenges and Future Trends in Commerce Education in India. वर्तमान समय में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन एवं ई – कॉमर्स क्षेत्र में हुई वृद्धि ने डाटा एनालिटिक्स, सीएसआर, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, श्रेष्ठ सम्प्रेषण व सहयोगात्मक वातावरण को बढ़ावा दिया है। वाणिज्य शिक्षा प्रायोगिक

ज्ञान को विशेष महत्व देती है। यह अधिगमम की प्रक्रिया को सरल बनाता है। जिससे शिक्षार्थी अपनी रूचि के अनुसार करियर के क्षेत्र का चुनाव करते है।

M. B., Rathod (2025). The challenges of Commerce Education in India. वाणिज्य शिक्षा के कुशल क्रियांवयन हेतु शैक्षणिक व्यवस्था में नवाचार को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। इसमें सर्वप्रथम पाठ्यक्रमों का आधुनिकीकरण, शिक्षकों हेतु पर्याप्त प्रशिक्षण व्यवस्था एवं शैक्षणिक पाठ्यक्रमों व निगमित संस्थाओं के मध्य स्थित अंतराल को दूर करने का प्रयास करना चाहिये। जिससे वाणिज्य शिक्षा तक सभी की पहुँच सुगम व सरल हो सके।

III. शोध पत्र का उद्देश्य

- वाणिज्य शिक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
- आर्थिक विकास एवं वाणिज्य शिक्षा के मध्य संबंध ज्ञात करना।
- आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में वाणिज्य शिक्षा की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

IV. शोध प्रविधि

शोध प्रविधि, सम्पूर्ण शोध कार्य को एक सूत्र में बांधती है। यह शोध कार्य पूर्णतः द्वितीयक समंक पर आधारित है। जिसमें मुख्य रूप से शोधपत्र, शोध लेख व प्रशासकीय रिपोर्ट (आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2024 – 25, केन्द्रिय बजट 2025 – 26, परीक्षा संबंधी सांख्यिकी रिपोर्ट) का प्रयोग किया गया है।

V. शोध उद्देश्यों का विश्लेषण

5.1 वाणिज्य शिक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

तालिका क्र. 1

क्र.	आयाम / तत्व	उद्देश्य
1.	व्यवसायिक वातावरण	व्यापार पर बाह्य कारकों के प्रभाव को समझना।
2.	लेखांकन और अंकेक्षण	वित्तीय स्थिति का आकलन करना।
3.	व्यावसायिक अर्थशास्त्र	संसाधनों का कुशलतम प्रयोग करना।
4.	व्यावसायिक वित्त	पूँजी एवं निवेश का प्रबंध करना।
5.	सांख्यिकी एवं शोध विधि	डाटा संबंधित निर्णय लेना।
6.	मानव संसाधन प्रबंधन	कर्मचारियों का विकास एवं प्रबंधन।
7.	बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थायें	वित्तीय लेन – देन को सुगम बनाना।
8.	विपणन प्रबंधन	उत्पाद को उपभोक्ता तक पहुँचाना।
9.	व्यवसाय के कानूनी पहलू	व्यापार को वैधानिक ढ़ांचे में रखना।
10.	कराधान	राजस्व संग्रह एवं अनुपालन सुनिश्चित करना।

(स्त्रोत : www.copilot.microsoft.com)

उपर्युक्त तालिका के अनुसार आर्थिक विकास प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से वाणिज्य शिक्षा के आयामों पर ही आधारित होता है। वाणिज्य शिक्षा के द्वारा केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक ज्ञान को भी बढ़ावा दिया जाता है। जिसमें मुख्य रूप से लेखांकन सॉफ्टवेयर, डाटा एनालिटिक्स व डिजिटल मार्केटिंग को भी सम्मिलित किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि देश के आर्थिक विकास में वाणिज्य शिक्षा का अद्वितीय स्थान है।

5.2 आर्थिक विकास एवं वाणिज्य शिक्षा के मध्य संबंध ज्ञात करना।

तालिका क्र. 2

शिक्षा पर होने वाले व्यय के रूझान (Education Expenditure Trends)

वर्ष	भारत – GDP का %	मध्यप्रदेश – GSDP का %	केन्द्र सरकार के व्यय का %	मध्यप्रदेश – राज्य सरकार के व्यय का %
2013 – 14	3.8%	~4.5%	~15%	~20%
2014 – 15	3.9%	~4.6%	15%	~21%
2015 – 16	3.9%	~4.7%	15%	~21%
2016 – 17	4.0%	~4.8%	15%	~21%
2017 – 18	4.1%	~5.0%	15%	~22%
2018 – 19	3.9%	~5.1%	~14.8%	~22%
2019 – 20	~4.0%	~5.2%	15%	~22%
2020 – 21	~4.0%	~5.3%	14.99%	~22%
2021 – 22	~4.0%	~5.4%	14.65%	~22%
2022 – 23	4.1%	~5.5%	14.16%	~22%
2023 – 24	~4.2%	~5.6%	~14%	~22%
2024 – 25	4.1% – 4.2%	~4.7%	~14%	~22%
2025 – 26	4.2%	~4.8%	~14%	~22%

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि प्रशासन द्वारा शैक्षणिक गुणवत्ता को बनाये रखने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। 2024 एवं 2025 के आंकड़ें दर्शाते है कि इस वर्ष केन्द्र सरकार द्वारा GDP का 4.2 % एवं राज्य सरकार द्वारा GSDP का 4.8 % भाग शिक्षा पर व्यय किया गया है। जो केन्द्र सरकार के कुल व्यय का लगभग 14 प्रतिशत व राज्य सरकार के कुल व्यय का लगभग 22 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि वाणिज्य शिक्षा एवं आर्थिक विकास का घनिष्ठ संबंध है।

5.3 आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में वाणिज्य शिक्षा की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

तालिका क्र. 3

भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वाणिज्यिक क्षेत्रों का योगदान

वर्ष	सेवा क्षेत्र का भाग	औद्योगिक क्षेत्र का भाग	कृषि क्षेत्र का भाग	निर्यात (USD Billion)
2013 – 14	~53%	~27%	20%	466
2014 – 15	~53.5%	~27%	~19.5%	468
2015 – 16	~54%	~27%	~19%	472
2016 – 17	~54%	~27%	~19%	478
2017 – 18	~54.5%	~27%	~18.5%	505
2018 – 19	~54.7%	~27%	~18.3%	540
2019 – 20	~54.8%	~27%	~18.2%	528
2020 – 21	~54.5%	~26.5%	~19%	500
2021 – 22	~54.9%	~27%	~18.1%	650
2022 – 23	~55%	~27%	~18%	702
2023 – 24	54.93%	~27.13%	17.94%	778
2024 – 25	55.3%	~27%	~17.7%	~810 (प्रोजेक्टेड)
2025 – 26	~55%	~27%	~18%	~850(प्रोजेक्टेड)

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वाणिज्यिक क्षेत्र का देश की अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान है। सेवा क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, कृषि क्षेत्र व निर्यात के आंकड़ें दर्शाते है कि वाणिज्यिक क्षेत्र निरंतर प्रगति कर रहा है। अतः स्पष्ट है कि यह आंकड़ें एक सफल वाणिज्य शिक्षा के परिणाम को प्रदर्शित करते है। वाणिज्य शिक्षा के द्वारा ही संस्थाओं को कार्यकुशल कार्यबल की प्राप्ति होती है। निर्यात में हुई वृद्धि दर्शाती है कि देश निरंतर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा है।

VI. निष्कर्ष

(Dr. AR Sushma, 2025) शिक्षा पर किया गया निवेश एवं जीडीपी की वृद्धि और दीर्घकालिक विकास के साथ सकारात्मक रूप से सह – संबंधित है। वाणिज्य शिक्षा का संबंध प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों से है। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा समय – समय पर आवश्यकतानुसार शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन किया जा रहा है। जिसमें मुख्य रूप से पारंपरिक शिक्षा पद्धति का स्थान आधुनिक शिक्षा ने ले लिया है। आधुनिक शिक्षा न केवल शिक्षार्थियों को शिक्षित करती है। अपितु, उनके भीतर कुशल नेतृत्व के गुण का संचार करती है। जिसमें नई शिक्षा नीति – 2020, डिजिटल इण्डिया व मेक इन इण्डिया वाणिज्य शिक्षा को नवीन दिशा प्रदान कर रही है।

VII. सुझाव

वर्तमान समय में उपस्थित प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का सामना करने के लिए वाणिज्य शिक्षा का होना अति आवश्यक है। वाणिज्य शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः वाणिज्य शिक्षा को आत्मसात् करके देश को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इस हेतु निम्न बिन्दुओं को अपनाया जाना चाहिये –

- सैद्धांतिक ज्ञान की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान पर जोर देना।
- पारंपरिक पाठ्यक्रमों के स्थान पर आधुनिक पाठ्यक्रमों को अपनाना।

- शैक्षणिक संस्थाओं एवं औद्योगिक निकायों के मध्य सहयोगात्मक संबंध स्थापित करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना।
- शिक्षकों को आधुनिक उपकरणों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित करना।

Reference

1. Ahmed, N. (2025). 'The Role of Commerce Education in Shaping Business Leaders for 2047'. 430-441.

2. Vishwanath, B. D., & Prabhakar, S. M. (2025). 'A Study on Challenges and Future Trends in Commerce Education in India'. *International Journal of Economics, Business, Accounting, Agriculture and Management towards Paradigm Shift in Research.*2(1), 88-93.

3. Rathod, M. B. (2025). 'The challenges of Commerce Education in India'. *Social Heritage Multidisciplinary National Peer – Reviewed Research Journal.*2(11), 22-26.

4. Dr. A R, Sushma. (2025). 'The Interrelationship Between Education and Economic Development: An Analysis of Investment Patterns'. *International Journal for Novel Research in Economics, Finance and Management.* 3(6), 01-05. www.ijnrefm.com

5. Kaur, H., & Singh, P. (2022). E pedagogy adoption during COVID 19: Insights from commerce faculties. International Journal of Educational Technology, 18(3), 299–315.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.